International Seminar [Hybrid Mode] on "Integrating Indian Knowledge System with Modern Education: Explore frameworks for incorporating IKS into contemporary curricula, aligning with NEP 2020" 19-20 Dec'2024
With e-ISSN 2394-8426 & International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0023

नैतिकता और मूल्य पर आधारित शिक्षा

दिनेश कुमार देवांगन
सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र
डॉ. खूबचंद बघेल शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भिलाई–3, जिला–दुर्ग (छ.ग.)।

सारांश

वर्तमान समय में मूल्य शिक्षा का महत्व कई गुना बढ़ गया है। हम यह सुनिश्चित करेंगे कि नैतिक शिक्षा एक बालक के प्रारंभिक शिक्षा से आरंभ होकर उसके जीवन के हर मोड़ पर वह नैतिक मूल्य के साथ–साथ नैतिकता को भी आत्मसात करें। राष्ट्र, विकास के किसी भी स्तर पर रहे चाहे वह विकासशील हो या विकसित, सभी में राष्ट्र की समृद्धि एवं गौरव का आधार शिक्षा है, जो सतत् एवं सामंजस्यपूर्ण विकास द्वारा हमारी क्षमताओं को उत्कृष्ट बनाती है। विद्यार्थियों के सर्वांगिण विकास पर नैतिक शिक्षा का महत्व सदैव रहा है। आज समाज में कई विसंगतियां देखने को मिलती है जहां पर असुरक्षा, भय, हिंसा, अविश्वास कई तरह की अवांक्षित गतिविधियों में लिप्त व्यक्तियों की तादात् बढ़ती जा रही है, वहां पर हमें नियमित व व्यवस्थित तरीके से बच्चों में समायोजन की क्षमता विकसित की जाए, साथ ही यह प्रयास भी जारी रखा जाए की विद्यार्थियों का आचरण इन मूल्यों के अनुरूप आत्म–अनुशासित व आत्म–संयमित रहें। शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास करती है।
विद्यार्थियों के ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि करती है, जिससे एक सभ्य सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज का निर्माण हो सकें। प्रस्तुत शोध में नैतिकता और मूल्य आधारित शिक्षा पर एक व्यापक प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तावना :–

शिक्षा का मूल उद्धेश्य और मुख्य कार्य बच्चों के सर्वांगीण और सुनियोजित ढ़ंग से व्यक्तित्व का विकास करना है, साथ ही मानव बुद्धि के सभी आयामों को विकसित करना है, ताकि हमारे बच्चें हमारे राष्ट्र को अधिक लोकतांत्रिक, एकजूट, सामाजित रूप से जिम्मेदार, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और बौद्धिक रूप से प्रतिस्पर्धी राष्ट्र बनाने में मदद कर सकें। मानव, शिक्षा द्वारा ही अपनी वाणी, विवेक, सामाजिकता, सृजनशीलता से विभूषित होता है। इसके द्वारा मनुष्य के जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान व कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। यह उसके जन्म से शुरू हो जाता है, उस समय वह बोलना, चलना, उठना, बैठना कुछ भी नहीं जानता। परन्तु जैसे–जैसे वह बड़ा होता है वैसे–वैसे वह परिवार और समाज के सम्पर्क में आता है। विद्यालय जाने से पूर्व बालक परिवार एवं समाज से बहुत कुछ सीखता है जहां मूल्यों एवं नैतिकता का विकास होता है। बच्चा स्कूल में प्रवेश के पूर्व परिवार व समाज से नैतिक व मूल्यों की बात सीखता है। नैतिक व मूल्य शिक्षा से मानव संस्कारित एवं योग्य बनता है। मूल्य हमें ऐसे दृष्टिकोण की ओर प्रेरित करते है, जो हमारे जीवन में मन–मस्तिष्क को स्वच्छता एवं शुद्धता प्रदान करते है। मूल्यों के विकास में विद्यालय की आंतरिक व्यवस्था, शिक्षकों का आदर्श, आपसी सहयोग, बच्चों के प्रति परिवार, समाज का व्यवहार और भावनाओं आदि का विशेष महत्व है।
शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। शिक्षा के माध्यम से ही विद्यार्थियों में सफल समायोजन की क्षमता पैदा की जा सकती है। शिक्षा व्यक्ति में दो प्रकार से समाज एवं वातावरण के साथ सामंजस्य बिठाने की क्षमता उत्पन्न करने का कार्य करती है। सबसे पहले शिक्षा व्यक्ति को ऐसा विवके, बुद्धि, कौशल और योग्यता दी है जिससे वह घटनाओं का व्यावहारिक विश्लेषण करके परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार कर सके और दूसरी ओर यह व्यक्ति को इतना कुशल बनाती है कि वह विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना सके।
समाज द्वारा निर्धारित नियमों और सिद्धांतों का पालन करना ही नैतिकता है और इन नियमों और सिद्धांतों के अनुसार आचरण करने की शक्ति को चरित्र कहा जाता है। यही कारण है कि सभी समाज शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति के नैतिक मूल्य और चरित्र को विकसित करने का प्रयास करते हैं। शिक्षा का मूख्य कार्य व्यक्ति का नैतिक मूल्य एवं चारित्रिक विकास करना है।

With e-ISSN 2394-8426 & International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0023

प्रत्येक बच्चे में व्यक्तिगत भिन्नता होती है। उनके पास कुछ शक्ति और क्षमताएं हैं। यदि इन शक्तियों एवं योग्यताओं की दिशा समाज की ओर उन्मुख हो तो वह बच्चा समाज एवं देश के लिए प्रेरक एवं प्रगति का कारक बनता है। अतः विभिन्न विद्यालयों में पढ़ने वाले इन विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता का विभिन्न परिक्षणों, गतिविधियों के माध्यम से मूल्यांकन करके बच्चें के व्यवहार में आवश्यक परिवर्तन लाया जा सकता है।

बच्चों के नैतिक मूल्यों का उनके व्यक्तिगत एवं सामाजिक व्यवहार पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। नैतिक मूल्य किसी व्यक्ति के विश्वास, दृष्टिकोण और व्यवहार को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता :

महान् दार्शनिक सुकरात ने जब लोगों को बौद्धिक रूप से शिक्षित करने के लिए अपनी संस्था ''एकेडमी'' खोली उस समय उसे जरा सा अनुमान नहीं था कि यह संस्था एक दिन सबसे अधिक आर्थिक लाभ देने वाले उद्योग में बदल जाएंगे और शिक्षा व्यावसायिक गतिविधियों का केंद्र बनकर रह जाएगी। पर वर्तमान समय में यह सब हो रहा है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली की खूबियों एवं विशेषताओं के साथ–साथ इसकी कुछ कमियां भी हैं जिसका हमारे समाज एवं देश पर बुरा प्रभाव दिखाई दे रहा है। जैसे–आज संयुक्त परिवार टूटकर एकाकी परिवारों में और एकाकी परिवार नैनो परिवार के रूप में विभाजित हो रहे हैं। अब परिवारों में बड़े बुजुर्गो का महत्व घटता जा रहा है जो बच्चों को कहानियां एवं किस्सों द्वारा नैतिक शिक्षा देते थे। दादी, नानी के किस्से का स्थान टी.वी. कार्टुन व इंटरनेट ने ले लिया है। जहॉ से मानवीन मूल्यों की शिक्षा की उम्मीद करना बेईमानी सी लगती है। विद्यालयों में ऐसी शिक्षा जो बच्चों के चरित्र का निर्माण कर उनमें सामाजिक सरोकार विकसित करे उसका स्थान व्यावसायिक शिक्षा ने ले लिया है, जिसके अंतर्गत हम एक आत्मकेंद्रित, सामाजिक सरोकारों और मूल्यों से कटे हुए एक इंसान का निर्माण कर रहे हैं, जिससे समाज में बिखराव की स्थिति पैदा हो रही है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली का एक मूल यह है कि यह रोजगारोन्मुख नहीं है अर्थात् इसमें कौशल और हुनर का अभाव है। स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय डिग्रियॉ बॉटने वाली एजेंसी बन गई है। वर्तमान प्रणाली को व्यावहारिक, सफल, एवं आदर्श स्वरूप प्रदान करने के लिए इसमें बदलाव एवं सुधार की आवश्यकता है। जिससे यह जीवन को सार्थकता प्रदान करने एवं आजीविका जुटाने में सक्षम हो सके।

नैतिक और मूल्य शिक्षा के प्रति उदासीन :

वर्तमान समय में जितने भी शैक्षणिक संस्थान है क्या उन सब का मूल्य यही है कि वे डिग्री/सर्टिफिकेट देकर व्यक्ति लिपिक बनाने या धन कमाने के लिए तैयार कर छोड़ दे? जिन्हें पैसा कमाने तकनीक व शिक्षा मिली हो वे अपनी बुद्धि का प्रयोग केवल उसी दिशा में लगाएगा, जैसी उनको मिली है। आखिर, विद्यालय के अतिरिक्त अन्य कोई स्थान या संस्थान है जहॉ बालक को बेहतर इंसान बनाने के लिए नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा दे सकें। विद्यालय में शिक्षा के गिरते स्तर से सरकार और शिक्षाविद् सभी चिन्तित तो दिखाई पड़ते है परन्तु मूल्य शिक्षा को लागू करने के प्रति संकोच य ?ा उदासीनता का भाव क्यो हैं? प्रति यह बात तो सभी स्वीकारते है कि वर्तमान समय में विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करके निकलने वाले विद्यार्थियों में मानवीन मूल्यों जैसे दया, ममता, प्रेम, करूणा, सहनशीलता, उदारता, भाईचारा, सहयोग आदि की निरंतर कमी होती जा रही है। आज के शिक्षित बच्चों के कंधों पर ही कल के समाज का उत्तरदायित्व है। जब उनमें मानवीन मूल्यों एवं संवेदनाओं का अभाव रहेगा तो उनसे यह कैसे आशा की जा सकती है किवे सामाजिक और पारिवारिक कर्त्तव्यों के प्रति निष्ठावान बने? संवेदनहीन व्यक्ति समाज, राष्ट्र की हित की बात नहीं कर सकता, उनसे परोपकार, उदार व कर्त्तव्य–बोध की आशा नहीं कि जा सकती।

शैक्षणिक संस्थाओं के साथ–साथ समाज के प्रबुद्ध वर्गो को भी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मूल्यों को लागू करने के लिए माहौल बनाने हेतु आगे आना चाहिए। मीडिया और समाचार–पत्र भी मूल्यों को शिक्षा में लागू करने की आवश्यकता के प्रचार–प्रसार में प्रभावशाली भूमिका निभा सकते हैं। उच्च शिक्षा के लिए पूरे देश में उत्तरदायी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग मूल्य शिक्षा के महत्व को बहुत पहले ही रेखांकित कर चुका है। इस संदर्भ में सरकार

With e-ISSN 2394-8426 & International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0023

और शिक्षाविदों की एक जैसी राय है किन्तु अब नैतिक और मूल्य पर आधारित शिक्षा को विद्यालय एवं महाविद्यालय के पाठ्यक्रमों में सम्मिलित करने के संबंध में सरकार कोई ठोस कदम नहीं उठा पा रही हैं।

नैतिक मूल्य आधारित शिक्षा में विद्यालयों की भूमिका :

शिक्षा बालक, पालक एवं शिक्षक का एक त्रिकोणिय सह–संबंध है। जिसका उद्धेश्य बालक सही मार्गदर्शन, अवसर और दिशा देकर उनका सर्वांगिण विकास करना, जिससे बालक बड़ा होकर परिवार, समाज एवं राष्ट्र का नाम रौशन कर सकें किन्तु क्या अकेले शिक्षक या अभिभावक इस पुनित कार्य को कर पाने में सक्षम है? नहीं, यदि विद्यालय मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करते है तो हम अभिभावकों की भी जिम्मेदारी है कि घर परिवार व समाज का माहौल भी सद्भाव व संयोजित ढ़ंग से रखें जिससे बालक अपने विद्यालय में अर्जित मूल्य आधारित शिक्षा का प्रभाव व फैलाव अपने आस–पास भी देखें, तभी यह शिक्षा प्रभावी होगी।

मूल्य आधारित शिक्षा में विद्यालय का योगदान महत्वपूर्ण होता है विद्यालय में बालक सिद्धांत और व्यवहार दोनों ही विधियों से शिक्षा प्राप्त करता है। यहॉ अध्यापक और बच्चों के मित्रमंडली का प्रभाव, उनके व्यवहार और अवधारणाओं में दिखता हैं।

एक नैतिक निर्देश समिति (1959) ने नेतिक और असष्सत्मिक मूल्यों को पढ़ाने की आवश्यकता को इस प्रकार समझाया हमें नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के शिक्षण पर विशेष जोर देना होगा। नैतिक मूल्य विशेष रूप से विभिन्न परिस्थितियों में मनुष्य के प्रति मनुष्य के आचरण को संदर्भित करते है जिसमें मनुष्य घर में, सामाजिक और बाहरी दुनिया के जीवन में आम तौर पर एक साथ आते हैं। यह आवश्यक है कि बचपन से ही हममें नैतिक मूल्यों का समावेश हो। हमें पहले घर को प्रभावित करना होगा। हमें डर है कि हमारे घर वह नहीं है जो होने चाहिए। घर में शुरूआती वर्षो में मन और शरीर दोनों की आदत बनी रहती हैं और बाद में हमारे जीवन को प्रभावित करती है। अच्छे संस्कार नैतिक शिक्षा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह कोई असामाल्य बात नहीं है कि जब लोग वर्षो के बंधन के बाद अचानक स्वतंत्रता प्राप्त कर लेते है, तो वे स्व–इच्छाधारी, अभिमानी और अविवेकी होने के लिए प्रवृत्त होते हैं। ऐसी स्थितियों में अच्छे शिष्टाचार आसानी से दूर हो जाते है और युवा उपद्रवी होने लगते है। अच्छे शिष्टसख्सा के महत्व को कम नही किया जा सकता है। अच्छे संस्कार हम पर उचित संयम लाएंगे और शब्दों में कठोरता औ हमारे व्यवहार में अशिष्टता को दूर करेंगे। अच्छे संस्कार वास्तव में उस तेल की तरह होते हैं जो मानव समाज की मशीन को सुचारू रूप से चलाने में मदद करता है हम अपने शिष्टाचार को तेजी से खोते जा रहे है और यह आवश्यक है कि हम उन्हें पुनः प्राप्त करें। इसलिए यह आवश्यक हो गया है कि बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा के समय से ही उसके पाठ्यक्रम में नैतिक मूल्य पर आधारित विषय–वस्तु को समाहित कर उनके आचार–विचार और व्यवहार को समाज व राष्ट्र हित के प्रति उन्मुख बनाये।

मूल्य शिक्षा को एक अलग अनुशासन के रूप में नहीं देखना चाहिए, यह तो निश्चित तौर पर शिक्षा के मूल पाठ्यक्रम में अवश्य शामिल होना चाहिए। केवल दिखाने के लिए न होकर व समस्याओं को हल करने के उद्धेश्य से न होकर इसके पीछे के स्पष्ट कारण और समाधान के बारे में सोचा जाना चाहिए। नीचे 21 वीं सदी में मूल्य शिक्षा और इसकी आवश्यकता को प्रदर्शित करने वाले प्रमुख बिन्दु निम्नानुसार है–

1. मूल्य शिक्षा दृष्टिकोण को व्यापक बनाता है जहां पर स्वहित के स्थान पर बहुहित को महत्व दिया जाता है।
2. मूल्य शिक्षा कठिन परिस्थितियों में सही निर्णय लेने में मदद करता है और व्यक्ति को मानसिक रूप से मजबूत बनाता हैं।
3. समय के साथ जिम्मेदारियां बढ़ती जाती है जिसे नैतिक शिक्षा पर आधारित शिक्षा निश्चित रूप से व्यक्ति उस जिम्मेदारी का निर्वहन बड़े धैर्य के साथ करते है।
4. मूल्य शिक्षा का महत्व जिज्ञासा जगाने और मूल्यों और हितों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह दूसरे के हितों का हनन करने से रोकता है।

With e-ISSN 2394-8426 & International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0023

5. इसके अलावा, जब लोग समाज और उनके जीवन में मूल्य शिक्षा का अध्ययन करते हैं, तो वे जीवन अपने लक्ष्यों और कर्त्तव्यों के प्रति अधिक उत्साहित और बंधे हुए होते है। इससे जागरूकता का विकास होता है।
6. मूल्य शिक्षा व्यक्तियों के व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण तत्व है जो उनके विचार और व्यवहार को अचेतन तरीके से प्रभावित करता है।

प्रत्येक देश अपनी अनूठी सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान को व्यक्त करने, बढ़ावा देने और समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए अपनी शिक्षा प्रणाी विकसित करता है। मूल्य औ नैतिकतर मे kcks hoyj/red कारक इसका उद्धेश्य है जो व्यक्ति को मार्गदर्शन प्रदान करते हुए और व्यवहार के लिए उचित सीमा निर्धारित करते हुए शक्तियों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करता है। मूल्यों और नैतिकता पर आधारित शिक्षा लोगों और आदर्शो के लिए सकारात्मक भावनाओं को बनाने और मजबूत करने में मदद करती है। इसे सामाजिक जीवन में सक्रिय भागीदारी और सामाजिक नियमों की स्वीकृति के लिए व्यक्तियों को तैयार करना चाहिए।

निष्कर्ष :

अंत में निष्कर्ष रूप कहा जा सकता है कि मूल्यपरक शिक्षा की अवधारणा अपेक्षाकृत आधुनिक तथा व्यापक है। परम्परागत रूप से प्रचलित धार्मिक शिक्षा एवं नैतिक शिक्षा आदि से यह भिन्न भी है। यह ''अमूख कार्य करे'' एवं ''अमूख कार्य न करें'' की व्याख्या नहीं है। यह वह आस्था अथवा विश्वास है कि कुछ कार्य निश्चित रूप से निरपेक्षतः अच्छे हैं तथा कुछ कार्य पूर्णतः अथवा निरपेक्षतः बुरे हैं। नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा में निश्चित रूप से सद्गुणों पर बल दिया जाता है। यह औचित्य के लिए शिक्षा है। आज देश व विश्व की जनसंख्या दिनों–दिन जिस गति से बढ़ रहीं है और मानव की आवश्यकताओं के साथ–साथ उसका जुनुन कि सबसे तेजी से आगे बढे व धन दौलत और ऐश्वर्य में इजाफा हो सोच वाली समाज, युवा पीढ़ी व लोगों के लिए नैतिक मूल्य पर आधारित शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. डॉ. मुहम्मद जावेद और अजय कुमार मौर्य, वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता, 2023, ISSN(o) : 2581-6241E-ISSN:2710-3943.
2. डॉ, रचना त्रिवेदी, छात्रों के नैतिक मूल्यों का उनकी समायोन क्षमता पर प्रभाव, 2023, E-ISSN:2710-3943.
3. डॉ, शिवराज कुमार, शिक्षा में मानव मूल्य और व्यावसायिक नैतिकताः आवश्यकता और महत्व, 2018.
4. शक्षा कपिल, डॉ. एच.के. रिसर्च मेथड्स (एल्लाइड साइंसेज में) 1989, हर प्रकाश भार्गव, आगरा।
5. उपाध्याय, डी,एस, (2007), मीमांसा दर्शनम्–सत्यधर्म प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. पाठक आर.पी. और पांडेय अमिता भारद्वाज (2013) वेदांत शिक्षा–दर्शन, कनिष्क प्रकाशक, ISSN : 2394-4099 ISBN 978-8120821446.